ABSTRACT

भ्रष्टाचार के बदलते आयामः समाज-दार्शनिकी विश्लेषण एवं विधिशास्त्रीय समाधान

डॉ. अदिति श्रीवास्तव

सारांश

भ्रष्टाचार एक सार्वभौमिक व व्यापक समस्या है जिससे समाज का प्रत्येक व्रर्ग किसी न किसी रूप में प्रभावित है। अधिकांश दार्शनिकों ने इस समस्या को एक सामाजिक या आर्थिक समस्या के रूप में ही देखा है, बहुत कम जगह इसके नैतिक या दार्शनिक-पक्ष पर प्रकाश डाला गया है। कोई अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय भ्रष्टाचार को परिभाषित नहीं करता अपितु इसे बढ़ाने वाले आपराधिक कृत्यों को सूचीबध्द करता है। जिस प्रकार भ्रष्टाचार बहुमुखी है, उसी प्रकार इसके कारण भी बहुमुखी है। किसी राज्य में भ्रष्टाचार का अस्तित्व उस राज्य की मानवाधिकारों के दायित्वों के प्रति विफलता को दर्शाता है। मानवाधिकारों का अनुपालन निश्चित ही भ्रष्टाचार को रोकने में मदद करेगा क्योंकि मानवाधिकार, शक्ति के उस दुरूपयोग को रोकता है, जो भ्रष्टाचार का आधार बनता है। भारत में भ्रष्टाचार उन्मूलन के नवीन प्रयास उस समय हो रहे हैं, जब वैश्विक स्तर पर भ्रष्टाचार उन्मूलन की ओर जागरूकता बढ़ी है। इस पृष्ठभूमि में यह शोध पत्र वर्तमान समय में भ्रष्टाचार के बदलते आयामों का समाज दार्शनिकी विश्लेषण कर उसके विधिशास्त्रीय समाधानों को खोजने में सहायक होगा।

मुख्य शब्द- भ्रष्टाचार के कारण,ट्रांसपेरेंसी इन्टरनेशनल,औपचारिक न्याय

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्